दादा भगवान परिवार का

अगस्त - २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

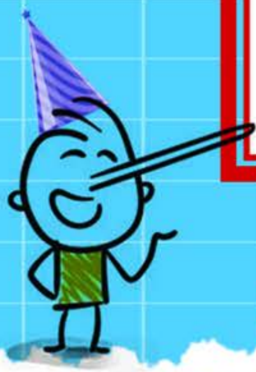

झूठ नहीं बोलना चाहिए

संपादकीय

बालमित्रों,

मान लो कि किसी ने एक बार झूठ बोल दिया। फिर वह पकड़ा न जाए इसलिए दोबारा झूठ बोलता है। ऐसा करते-करते वह बार-बार झूठ बोलता है ताकि उसका झूठ पकड़ा न जाए। उसे तो ऐसा ही लगता है कि वह अपने फायदे के लिए झूठ बोल रहा है। लेकिन फायदा होना तो एक तरफ, बल्कि नुकसान ही नुकसान होता है। ऐसा घाटे का व्यापार कौन करता है, आप करते हो?

नहीं, किसी को ऐसा करने की इच्छा नहीं होती। लेकिन फिर भी कभी-कभी ऐसा हो जाता है। तो चलो, इस अंक में जानते हैं कि झूठ क्यों बोल देते हैं? झूठ बोलने से क्या नुकसान होता है? झूठ बोलने के बारे में चींटी बहन की बिरवा के साथ क्या चर्चा हुई और गप्पीदास खरगोश ने क्या सीखा? थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स एड्वेन्चर के लिए कहाँ गए और आलू-चिली की लाइफ में आगे क्या हुआ...?

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

August, 2025
Year 13, Issue : 05
Conti. Issue No.: 149
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : कोई झूठ क्यों बोलता है?

पूज्यश्री : यदि कोई कुछ पाना चाहता है और वह उसे नहीं मिलता तो वह झूठ बोलकर उसे प्राप्त करता है। खुद का अच्छा दिखाने के लिए झूठ बोलता है। इम्प्रेशन डालने के लिए झूठ बोलता है। भय के कारण झूठ बोलता है। भीतर भय छिपा हुआ है कि कोई मुझे कुछ कहेगा।

प्रश्नकर्ता : मैं डर के कारण छोटी-छोटी बातों के लिए कई बार झूठ बोल देता हूँ। तो मुझे क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : एक बार सच बोल डालो। फिर आपको अनुभव होगा कि कोई परेशानी नहीं हुई। झूठ बोलने की ज़रूरत ही नहीं है। अपमान का डर लगता है कि मुझे डाँटेंगे तो? डाँटना हो तो डाँटें, लेकिन झूठ नहीं बोलना चाहिए।

आपसे कुछ टूट गया और अगर मम्मी पूछे, 'किसने तोड़ा?' तो आप बोल देते हो कि 'मुझे नहीं पता।' झूठ बोलते हो। अगर झूठ बोल देते हो तो थोड़ी देर बाद कह देना कि 'मैंने झूठ बोला था। मुझसे ही टूट गया था। खेलते समय टूट गया था।' सच कह देना चाहिए। सच

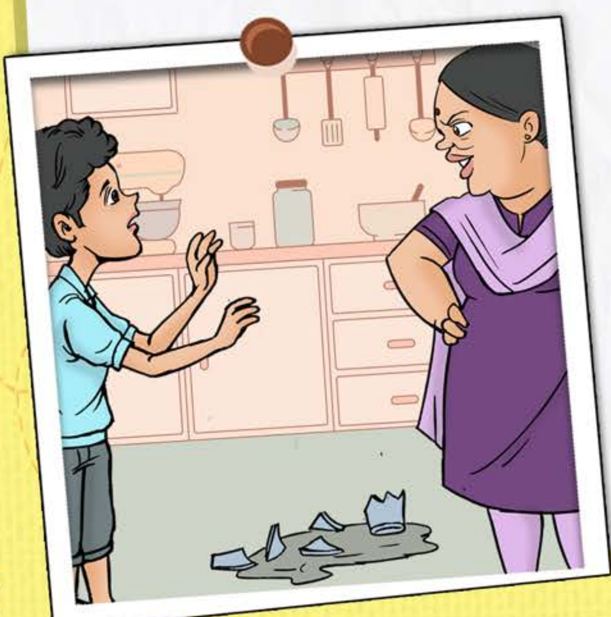

बोलने से सभी खुश होंगे और कोई डाँटेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : झूठ बोलने से क्या नुकसान होता है?

पूज्यश्री : झूठ बोलने से लोगों का हम पर से विश्वास उठ जाता है। लोग कहते हैं कि 'ये झूठा है, निकम्मा।' झूठ बोल देते हो तो माफी माँग लेना। जिससे झूठ बोला हो, उससे कहना, 'मुझसे गलती हो गई। अब से नहीं बोलूँगा।' कोई आपसे झूठ बोलता है तो आपको अच्छा नहीं लगता। इसलिए आपको निश्चय करना चाहिए कि किसी से झूठ नहीं बोलना है।

यदि सामने वाला झूठ बोलता है और आपको पसंद नहीं आता हो तो आपको जाँच करनी चाहिए कि क्या आपने जीवन में कभी ऐसा झूठ बोला है? यदि हाँ, तो उसकी माफी माँगना और फिर से नहीं बोलने का निश्चय करना।

चलो खेलें...

जोड़ और घटाव के निशान के अनुसार वर्ग में कलरफुल चौकोर टुकड़े जोड़ो या घटाओ और दाहिनी तरफ दिए गए सही जवाब के साथ मिलाओ।

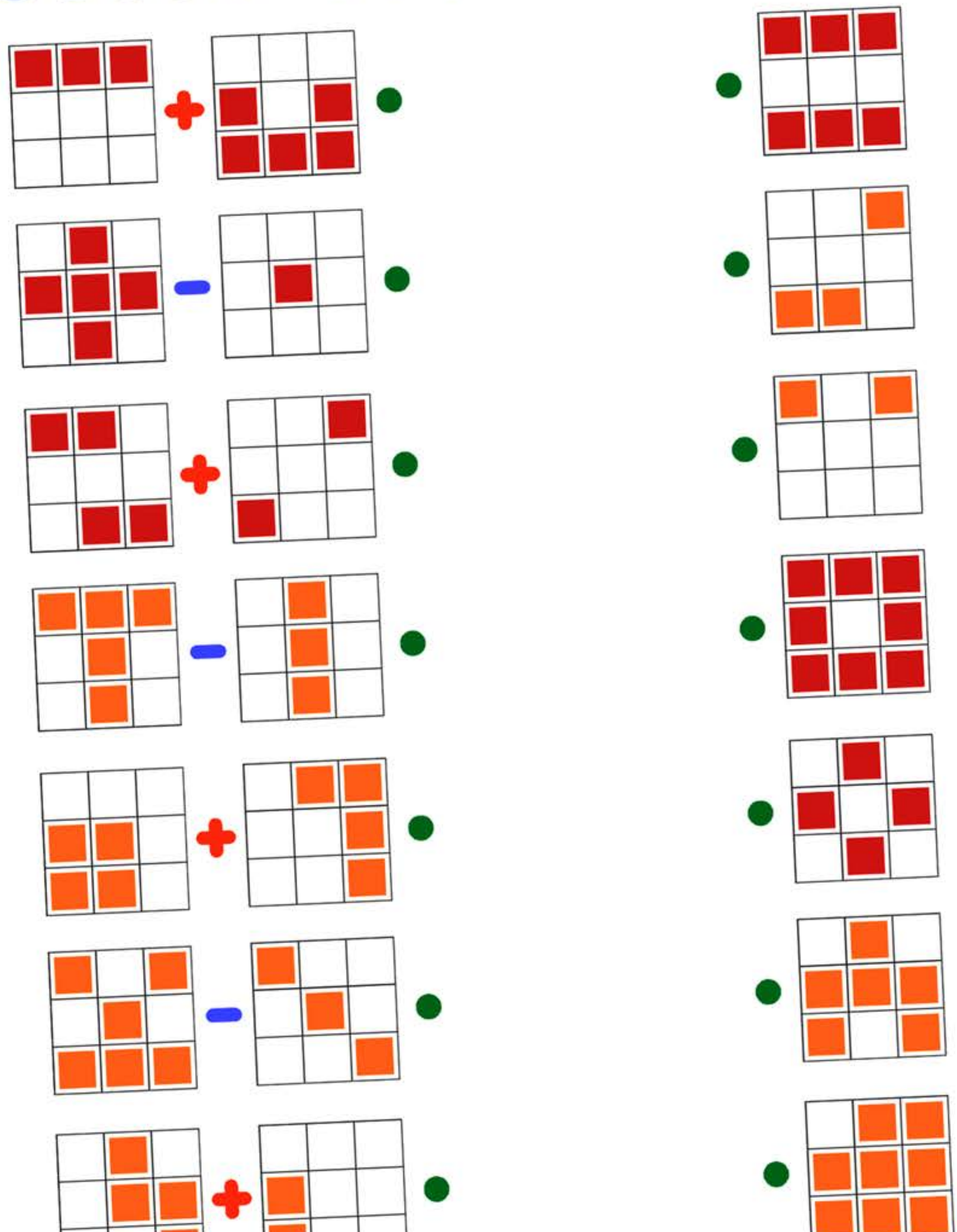

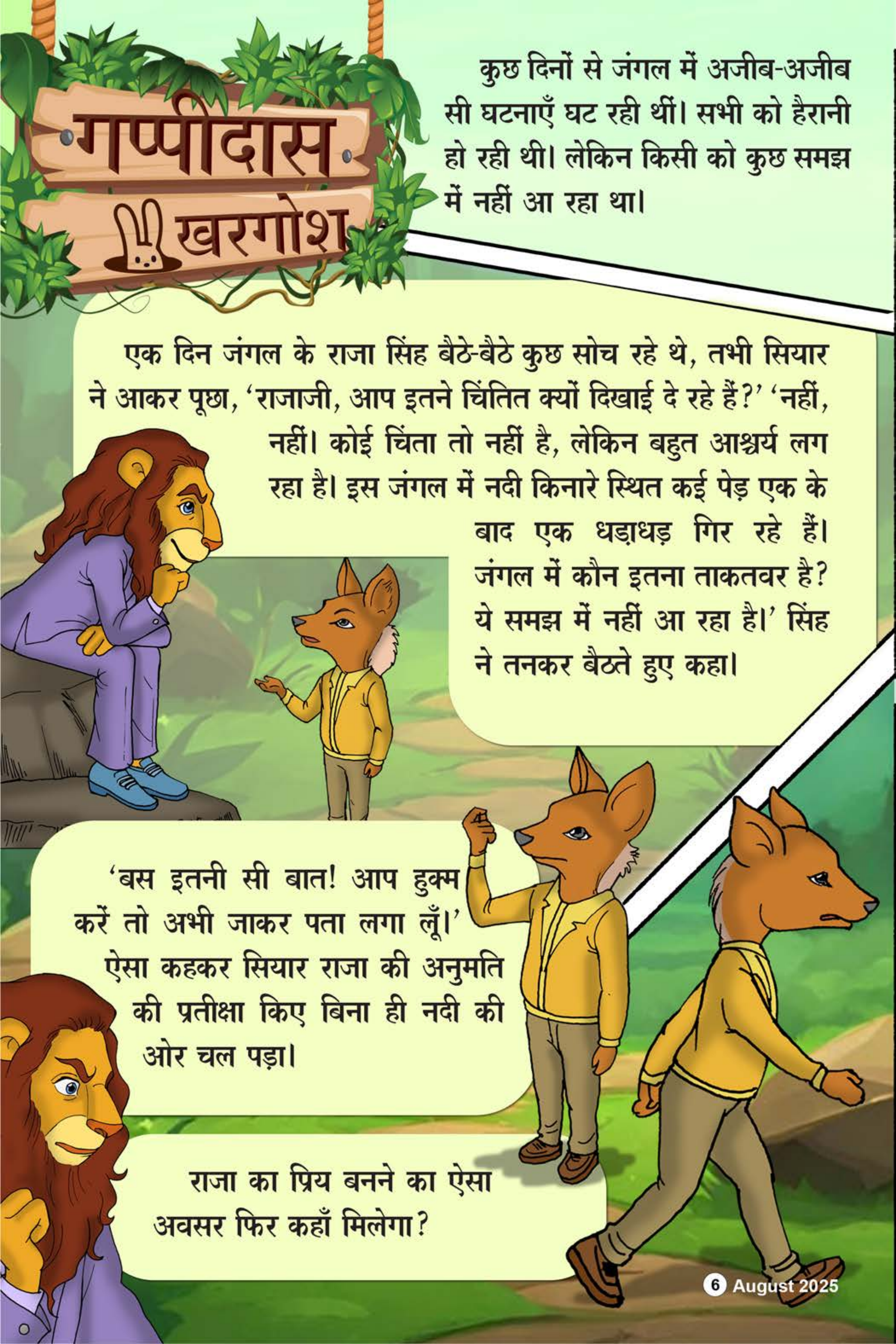
गप्पीदास खरगोश
कुछ दिनों से जंगल में अजीब-अजीब सी घटनाएँ घट रही थीं। सभी को हैरानी हो रही थी। लेकिन किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।
एक दिन जंगल के राजा सिंह बैठे-बैठे कुछ सोच रहे थे, तभी सियार ने आकर पूछा, 'राजाजी, आप इतने चिंतित क्यों दिखाई दे रहे हैं?' 'नहीं, नहीं। कोई चिंता तो नहीं है, लेकिन बहुत आश्चर्य लग रहा है। इस जंगल में नदी किनारे स्थित कई पेड़ एक के बाद एक धड़ाधड़ गिर रहे हैं। जंगल में कौन इतना ताकतवर है? ये समझ में नहीं आ रहा है।' सिंह ने तनकर बैठते हुए कहा।
'बस इतनी सी बात! आप हुक्म करें तो अभी जाकर पता लगा लूँ।' ऐसा कहकर सियार राजा की अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना ही नदी की ओर चल पड़ा।
राजा का प्रिय बनने का ऐसा अवसर फिर कहाँ मिलेगा?

सियार ने नदी किनारे जाकर देखा तो आश्चर्य से उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। उसने देखा कि एक छोटा सा खरगोश कुछ खा रहा था।
खाने के बाद उसने अपने आगे के पैर ऊपर उठाकर ताकत दिखाई और दौड़कर फटाक से एक पेड़ को नीचे गिरा दिया।
सियार राजा के पास वापस आया और उन्हें पूरी बात बताई। यह सुनकर सिंह सोच में पड़ गया। उसने सियार से कहा, 'उस खरगोश में इतनी ताकत आ गई कि वह पूरे का पूरा पेड़ गिरा दे! तुम तुरंत वापस जाओ और उस मच्छर को मेरे सामने हाज़िर करो।'

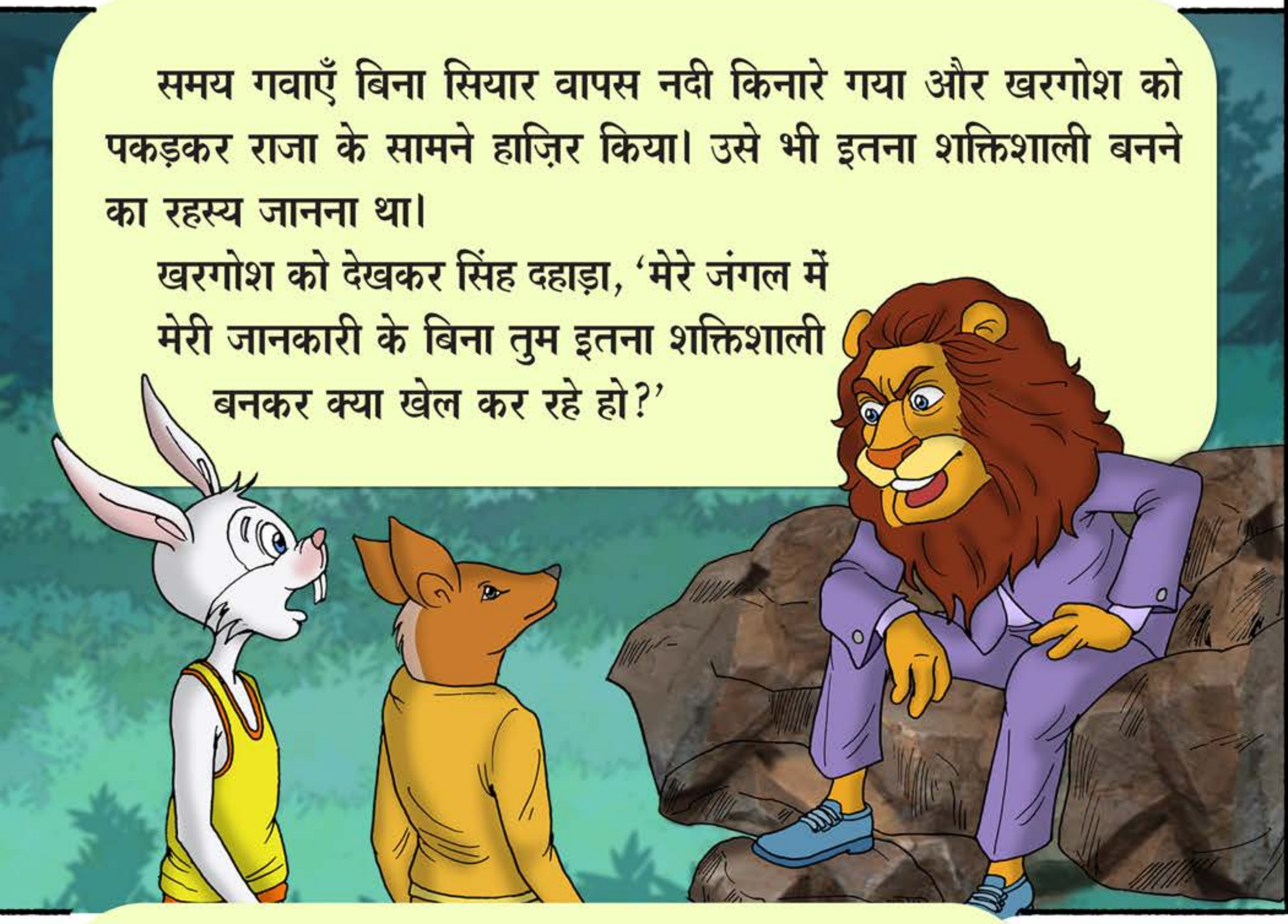
समय गवाएँ बिना सियार वापस नदी किनारे गया और खरगोश को पकड़कर राजा के सामने हाज़िर किया। उसे भी इतना शक्तिशाली बनने का रहस्य जानना था।
खरगोश को देखकर सिंह दहाड़ा, 'मेरे जंगल में मेरी जानकारी के बिना तुम इतना शक्तिशाली बनकर क्या खेल कर रहे हो?'

खरगोश ने बिना डरे कहा, 'यह जादू तो मेरे सुर्ख लाल फल का है।' सिंह ने संदेह के साथ पूछा, 'राजा के साथ मज़ाक कर रहे हो? तुम्हें इसकी सजा पता है न?'
खरगोश ने कहा, 'एक बार वह फल खाकर आजमाकर देखिए। मेरी बात गलत निकले तो आपका पंजा और मेरा सिर। आपको जो करना हो वह कीजिएगा।'

सच्चाई जानने के लिए सिंह खरगोश के साथ नदी किनारे गया। खरगोश ने उसे एक मज़ेदार सुर्ख लाल गोल-मटोल फल दिया। सिंह ने वह फल खाया। फल तो अच्छा था।
अब देखना यह था कि वह काम करता है या नहीं! फल खाकर सिंह ने एक बड़े से पेड़ को पैर से धक्का मारा और सचमुच में वह पेड़ गिर गया। फिर यह बात हवा की रफ्तार से जंगल में फैल गई।

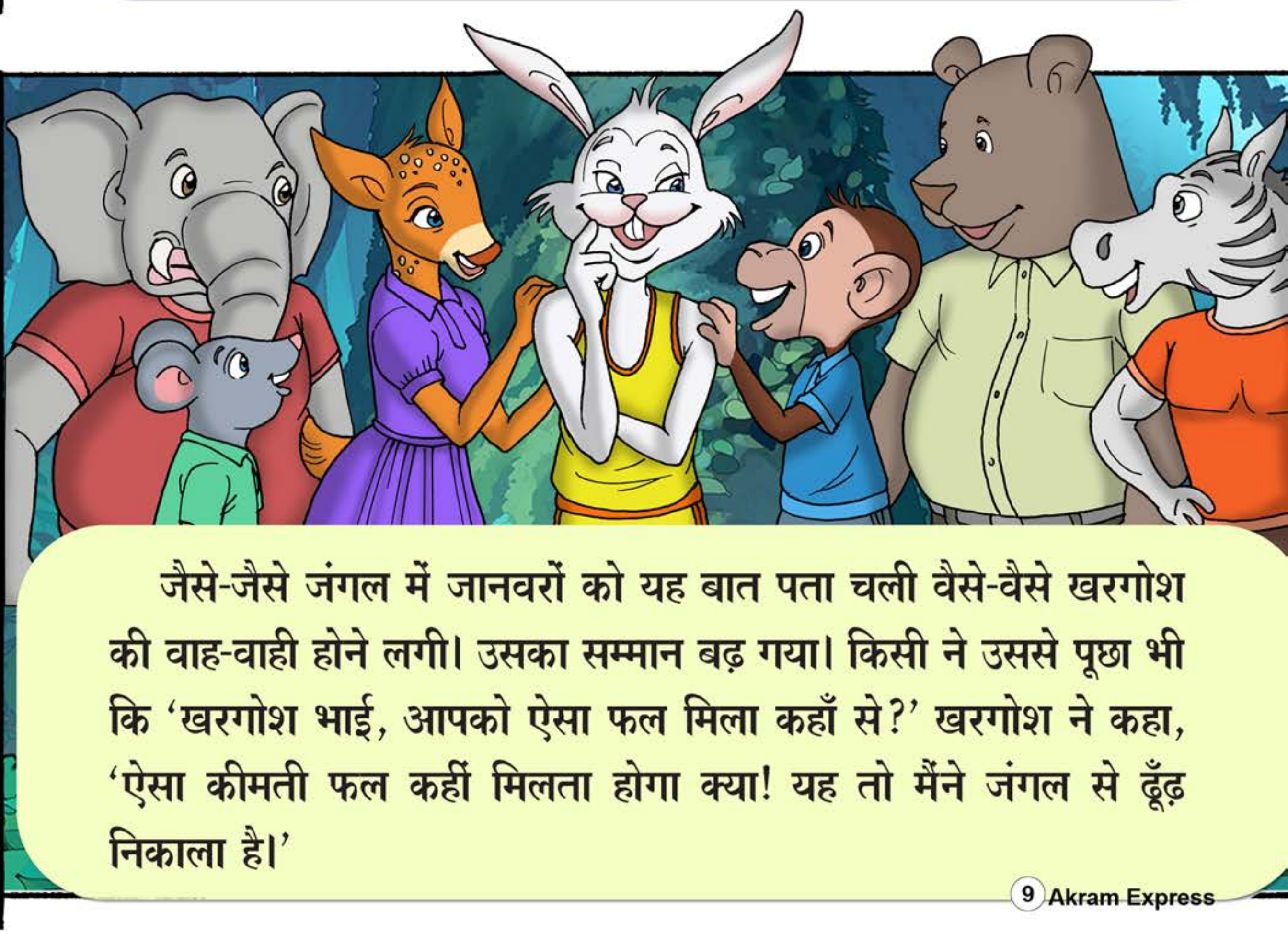
जैसे-जैसे जंगल में जानवरों को यह बात पता चली वैसे-वैसे खरगोश की वाह-वाही होने लगी। उसका सम्मान बढ़ गया। किसी ने उससे पूछा भी कि 'खरगोश भाई, आपको ऐसा फल मिला कहाँ से?' खरगोश ने कहा, 'ऐसा कीमती फल कहीं मिलता होगा क्या! यह तो मैंने जंगल से ढूँढ़ निकाला है।'

यह सुनकर सभी खरगोश को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। उस फल को पाने के लिए वे उसके आगे- पीछे घूमने लगे। लेकिन खरगोश सभी को यह फल ऐसे ही थोड़ी दे देता? पहले वह फल लेने आने वालों को बिठाता। फिर अपनी बहादुरी के किस्से सुनाता

यह फल खाने से मुझमें इतनी ताकत आ गई कि यह पेड़ तो ठीक है लेकिन एक दिन रात को पास के जंगल से मैं अकेला आ रहा था तब मेरे पीछे दो बाघ पड़ गए और मैंने अकेले ही उन्हें भगा दिया।' इस तरह की कितनी ही बातें खरगोश सबको सुनाता।

जंगल में खरगोश का मान-सम्मान बढ़ गया। जानवरों को कुछ भी निर्णय लेना होता तो वे पहले खरगोश से पूछते। यह देखकर सिंह को चिंता होने लगी। उसने फिर से सियार को बुलाया और कहा, 'यह बात मेरे दिमाग में नहीं बैठ रही। एक फल खाने से इतनी सारी ताकत कैसे आ सकती है? तुम छानबीन करो और सही बात क्या है वह मुझे बताओ।'
सियार ने खरगोश पर नज़र रखना शुरू किया। एक दिन सियार खरगोश को पकड़कर राजा के पास ले आया और जंगल के अन्य जानवरों को भी राजा के पास बुलाया। जब सब आ गए तो सियार ने कहा, 'खरगोश की सभी बातें गलत हैं, वह झूठ ही डींगे हाँकता है। वह लाल रंग का फल कुछ और नहीं बल्कि शहर में मिलने वाला टमाटर है। जिसे देकर खरगोश ने हमें बेवकूफ़ बनाया।'

‘लेकिन उसे खाने से पेड़ गिराने की ताकत आ जाती थी, उसका क्या?’ चीता ने प्रश्न पूछा।
‘इसके बारे में इस खरगोश कुमार से ही पूछो।’ सियार ने खरगोश की ओर देखते हुए कहा।
खरगोश ने डरते हुए बताया, ‘नदी के आसपास सड़े हुए, कमज़ोर पड़ गए पेड़ों को सुखाने के लिए मैंने मनुष्यों को उसके चारों ओर दवा डालते हुए देख लिया था।
मुझे पता था कि अब इन पेड़ों के तने इतने कमज़ोर हो गए हैं कि मेरे छूने से भी गिर जाएँगे। इसलिए रोब जमाने के लिए मैंने यह पूरी योजना बनाई।’

यह सुनकर सभी जानवर क्रोधित हो गए और खरगोश को मारने के लिए आगे बढ़े। इससे डरकर खरगोश सिंह के पैरों में गिर पड़ा। उसने राजा से माफी माँगते हुए कहा, 'झूठ बोलकर डींगें हाँकने की मेरी आदत मुझ पर ही भारी पड़ गई। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। मुझे माफ कर दीजिए।'

सिंह ने जानवरों को रोकते हुए कहा, 'खरगोश को अपनी गलती समझ में आ गई है। इसलिए उसे सुधरने का एक मौका देना चाहिए।' फिर खरगोश की ओर देखकर कहा, 'अगर तुमने ऐसी गलती दोबारा की तो तुम्हें मारने के लिए हमें एक भी लाल फल की ज़रूरत नहीं पड़ेगी!' यह सुनकर सभी जानवर हँस पड़े। खरगोश का सिर शर्म से झुक गया।

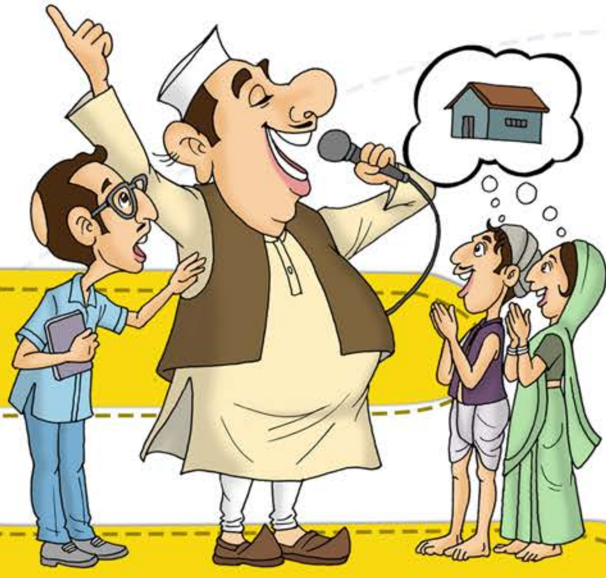

झूठ बोलकर लाभ उठाना, धोखा देना, वह मानवता से नीचे उतरकर पाशवता में गया। यदि सामने वाला दस बार झूठ बोलता है तो भी हमें सच बोलकर हेल्प ही करनी चाहिए।

यह तो

जिसे झूठ बोलने की आदत हो गई हो, उसे साथ-साथ माफी माँगने की आदत भी डाल लेनी चाहिए।

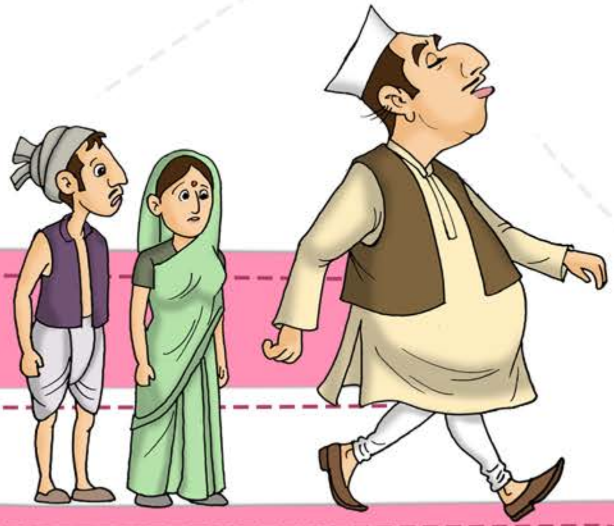

अगर झूठ बोलते हैं और पकड़े नहीं जाते हैं तो उसका दंड अगले जन्म में मिलता है। अगले जन्म में सच बोलने पर भी झूठ बोलने का आरोप लगता है।

नई बात है!

झूठ बोलने से जीभ चली जाती है। (गूंगे हो जाते हैं।) ऐसा दंड आता है।

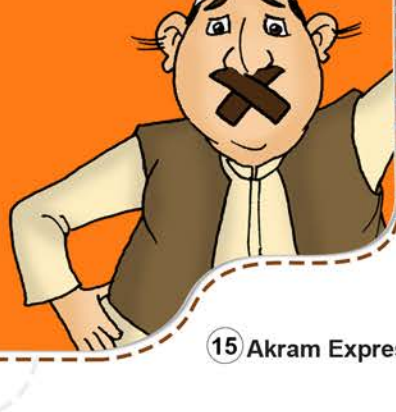

चलो खेलें...

खरगोश को गाजर तक पहुँचाओ।

AALOO CHILLY

थीओ के कैफ़े पर अपने लिए चल रही पार्टी को देखकर मुश्किल से चिली का मूड ठीक हुआ था। लेकिन वहाँ उसने कोको को देखा और जिस तरह सभी ने कोको की प्रशंसा की, उससे चिली को फिर से शरीर में जलन होने लगी। वह पार्टी छोड़कर चला गया। उसे जाता हुआ देखकर आलू उसके पीछे गया। अब आगे क्या हुआ वह आलू ही बताएगा।

चिली की आँखों में आँसू देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ। उसके लिए तो ये पार्टी रखी थी और वही... मुझे लगता है कि अगर मैं एक बार उसके साथ बात कर लूँगा तो सब ठीक हो जाएगा।

मैं उसके पीछे गया। पास जाकर उसे बुलाया, ‘चिली, कहाँ जा रहे हो? चलो न हम साथ में चिली शेक पीते हैं!’

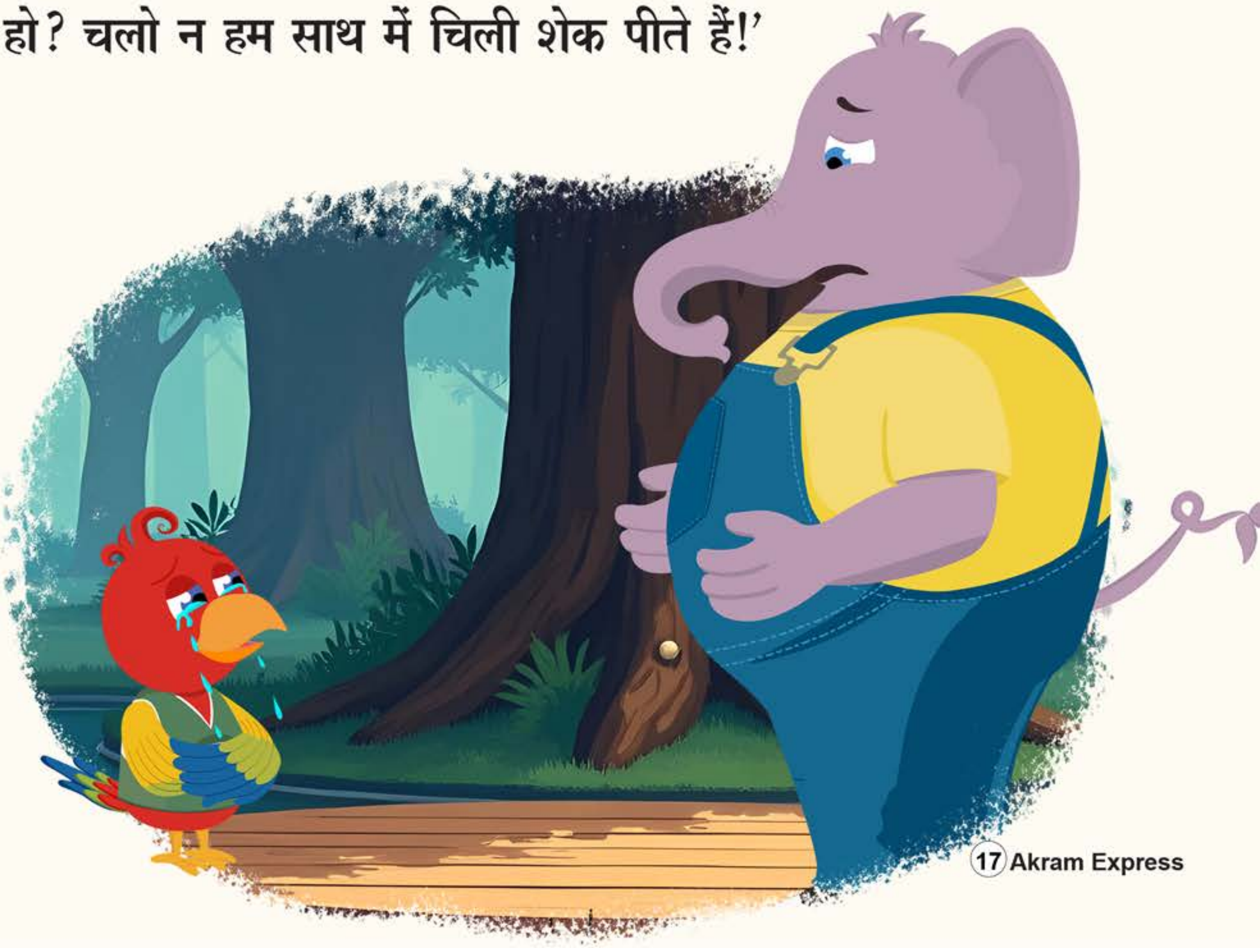

चिली पीछे मुड़ा और बहुत रोने लगा और कहने लगा, 'तुम्हें जो कलना है वह कलो। पाल्टी मेरी है तो टोटो यहाँ क्या कल लहा है? टुम मेले फ्लेन्ड हो या कोको के?'

तभी पार्सली वहाँ आया और मेरे कान में कहने लगा, 'आलू भाई, यह क्या बोल रहा है? यह रोते हुए बोलेगा तो कैसे पता चलेगा?' और मुझे लगा, ठीक से तो बोल रहा है। मैंने पार्सली से कहा, 'वह कह रहा है कि तुम्हें जो करना है वह करो। पार्टी मेरी है तो कोको यहाँ क्या कर रहा है? तुम मेरे फ्रेन्ड हो या कोको के?'

और मैं चिली से कुछ कहता उससे पहले ही पार्सली कहने लगा, 'तुम्हें शरम नहीं आती, चिली? आलू भाई ने तुम्हारे लिए इतनी मेहनत की। तुम हार गए हो, फिर भी तुम्हारे लिए इतनी बड़ी पार्टी रखी! और फिर भी तुम उन्हें जो जी में आए बोल रहे हो!'

बस, फिर तो चिली का रोना बंद हो गया और वह गुस्से से लाल-पीला हो गया और कहने लगा, "तो नहीं करना चाहिए था। मैंने उससे कहाँ कहा था कि मेरे लिए पार्टी रखो। लेकिन मैंने तो उसके लिए पार्टी दी थी। वह जितनी बार स्केटिंग प्रैक्टिस करता था, तब मैं उसे चियर करने जाता था और मैं उससे ऐसा भी नहीं कहता था कि 'शायद कुल्फी जीत जाएगा।' मैं हमेशा ऐसा ही कहता था कि 'आलू, तुम ही जीतोगे, तुम कर सकते हो।' मैंने कुल्फी को अपना फ्रेन्ड नहीं बना लिया था!"

मेरी इच्छा नहीं थी फिर भी चिली को मुझसे दुःख हो गया था। इसलिए मेरे मुँह से निकल गया, 'सॉरी चिली, तुम मेरी बात सुनो न... मैं तुम्हें बताता...'

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here
https://shorturl.at/Cv0AC

आलू को अपनी बात चिली से कहनी ही है। लेकिन क्या चिली उसकी बात सुनेगा?

बातचीत विथ चींटी

बिरवा रसोई में गई। प्लैट्फॉर्म पर डिश में कुछ ढका हुआ देखा। खोलकर देखा तो बहुत मज़ेदार पेस्ट्री थी। उसके मुँह में पानी आ गया। उससे रहा नहीं गया। गपागप, दो कौर में तो आधी पेस्ट्री उसके पेट में चली गई। तभी उसकी फ्रेन्ड की आवाज़ सुनाई दी। वह फटाफट बाहर आई।

बिरवा को उसकी फ्रेन्ड खेलने के लिए बुलाने आई थी। वह उसके साथ खेलने चली गई। बिरवा खेल कर वापस लौटी। उस समय रसोई में मम्मी गुस्से में खड़ी थीं। बिरवा को देखते ही उन्होंने कहा, 'यह पेस्ट्री किसने खाई?'

बिरवा सोचने लगी, अब क्या कहूँ? अगर सच बताऊँगी तो मम्मी गुस्सा करेंगी। इससे तो अच्छा है कि झूठ ही बोल दूँ। मम्मी को पता नहीं चलेगा। इससे पहले भी मम्मी मुझे कहाँ पकड़ पाई थीं? वह कुछ कहती उससे पहले किसी और की आवाज़ सुनाई दी, 'यह मैंने खाई है।'

बिरवा और उसकी मम्मी दोनों ने आवाज़ की दिशा में देखा। वहाँ पर एक सुर्ख लाल रंग की चींटी तनकर खड़ी थी। चींटी ने मम्मी की ओर देखकर कहा, 'आप इस तरह खाने की चीज़ खुली छोड़कर चले जाओगे तो ऐसा ही लगेगा न कि हमारे लिए होगी। इसलिए मैंने पूछा नहीं और उस पर इतनी स्वादिष्ट पेस्ट्री!'

बिरवा ने मन में कहा, 'थैंक गॉड... आज तो इस चींटी ने मुझे बचा लिया। लेकिन यह चींटी है बहुत बहादुर! उसे मम्मी से भी डर नहीं लगता। सच-सच बता दिया। लेकिन मम्मी आगे कुछ नहीं पूछे तो अच्छा।

मम्मी आगे कुछ पूछने ही जा रही थीं कि तभी उनके फोन की रिंग बजी। इसलिए वे सिर्फ इतना ही बोलीं, 'तुम दोनों यहीं खड़े रहो। आकर तुम लोगों की खबर लेती हूँ।' ऐसा कहकर वहाँ से चली गईं।

बिरवा ने चींटी की ओर देखकर कहा, 'थैन्क यू, यार।'

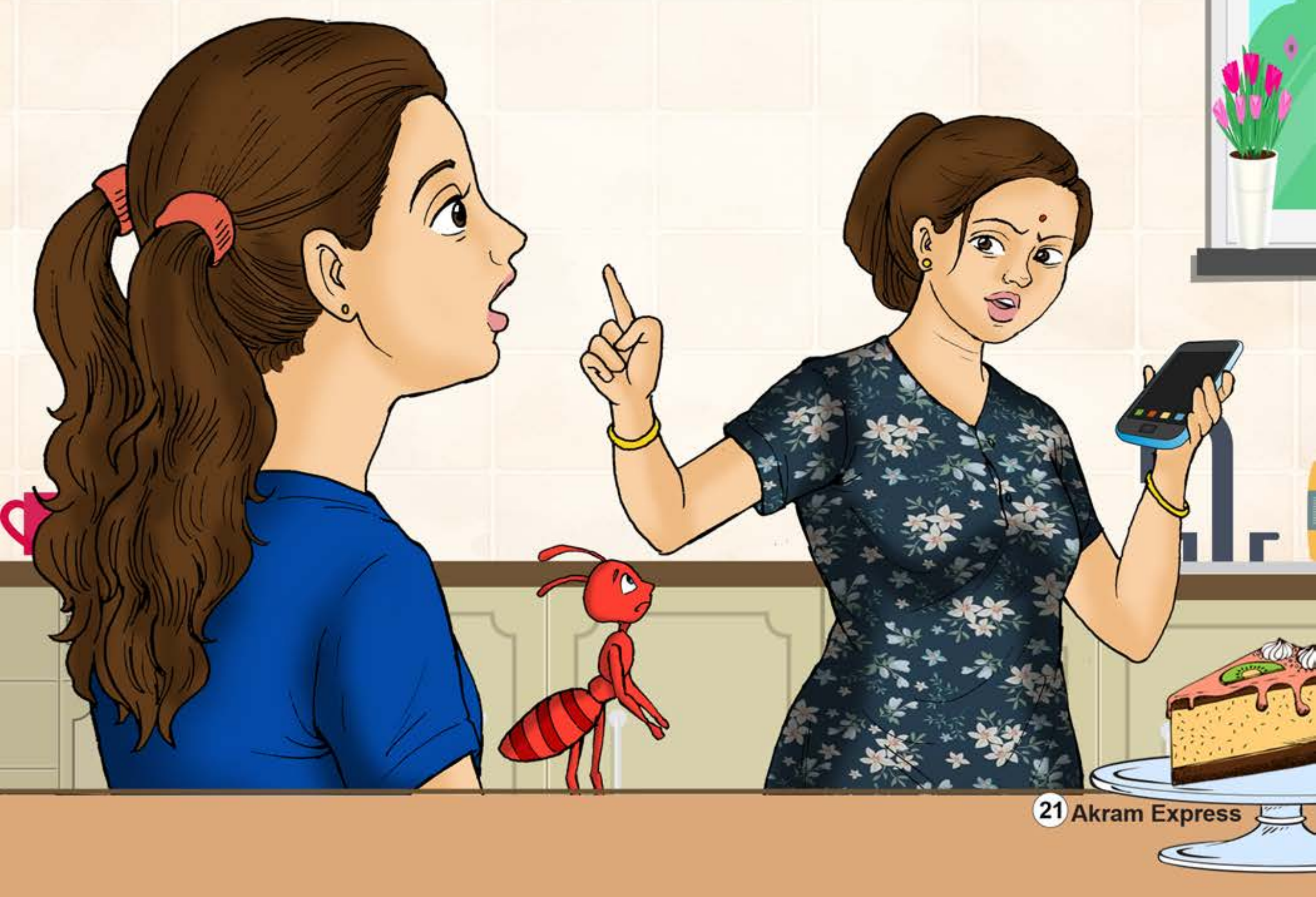

चींटी ने कहा, 'थैन्क यू? किसलिए?'

बिरवा बोली, 'तुमने मुझे बचाया इसलिए।'

चींटी थोड़ी तेज आवाज़ में बोली, 'मैंने तुम्हें बचाने के लिए कुछ नहीं कहा। वह तो मैंने पेस्ट्री खाई थी, वही कहा है।'

'तुम्हें मम्मी से डर नहीं लगा? तुम रोज़ सबसे इस तरह सच-सच कह देती हो? अपनी मम्मी से भी?' बिरवा ने हैरानी से पूछा।

'मेरी मम्मी ने मुझे दो बातें सिखाई हैं, एक तो यह कि हमें अच्छी तरह ढककर रखी हुई चीज़ें कभी नहीं खानी चाहिए और दूसरी यह कि कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।' कहते हुए चींटी अपने मुँह पर लगी हुई पेस्ट्री पर जीभ फेरने लगी।

बिरवा को चींटी के साथ बात करना अच्छा लग रहा था। इसलिए उसने आगे कहा, 'तुम्हारी मम्मी तुमसे कुछ नहीं कहती होंगी, लेकिन मेरी मम्मी को आने दो। आज तुमने सच बोला है

इसलिए तुम्हें डाँट पड़ेगी। यह सुनकर भी तुम्हें डर नहीं लग रहा है?'

'देखो लड़की, मम्मी तो मम्मी ही होती है। फिर वो मेरी हो या तुम्हारी। मम्मी हमेशा सच ही बोलती है। तुम्हारी मम्मी मुझे डाँटेंगी इसलिए क्या मैं झूठ बोलूँ? क्या तुम मम्मी से झूठ बोलती हो?' चींटी ने पलटकर प्रश्न पूछते हुए कहा।

'हाँ... हाँ... जब मुझे लगता है कि मम्मी मुझे डाँटेंगी तो मैं फट से झूठ बोल देती हूँ और मम्मी को पता भी नहीं चलता! और झूठ बोलने में नुकसान भी क्या है?' बिरवा ने थोड़ा चिढ़ते हुए पूछा।

'मुझे नहीं पता कि क्या नुकसान होता है। अगर तुम्हें जानना है तो मेरे साथ चलो। मेरी मम्मी से ही पूछ लेना।' चींटी लटक-मटककर चलने लगी।

बिरवा को चींटी की बातों में दिलचस्पी जागी। आज पहली बार उसे जानने की इच्छा हुई कि झूठ बोलने से क्या नुकसान होता है। इसलिए वह चींटी के पीछे चलने लगी।

चींटी एक बिल के पास आकर रुक गई। खुशबू आने पर मम्मी चींटी बाहर आई। नन्ही चींटी को देखकर खुश होते हुए बोली, 'आ गई मेरी लाड़ली? ऐसा लगता है कि आज कुछ स्वादिष्ट भोजन मिला है!'

वह आगे कुछ पूछती उससे पहले उसे बिरवा दिखाई दी।

चींटी बोली, 'मम्मी, आज इस लड़की के घर स्वादिष्ट भोजन मिला। लेकिन यह लड़की तो बिल्कुल नीरस बातें करती है।'

यह सुनकर बिरवा ने उसे आँखें दिखाईं।

चींटी मम्मी ने चींटी को चुप रहने का इशारा किया और बिरवा से पूछा, 'मेरी लाड़ली की शिकायत करने आई हो? वैसे तो यह ढककर, संभाल कर रखी हुई चीज़ें कभी नहीं खाती। लेकिन...'

'आज भी नहीं खाई, मम्मी। मैंने तो इस लड़की ने जो पेस्ट्री खुली रख दी थी और जो नीचे गिरी हुई थी वही खाई है। यह तो आपसे कुछ पूछने आई है।' नन्हीं चींटी ने कहा।

'आन्टी, आपकी बेटी कह रही थी कि झूठ बोलने से नुकसान होता है। तो मुझे यह जानना था कि क्या नुकसान होता है।' बिरवा ने मम्मी चींटी से सीधे-सीधे पूछ लिया।

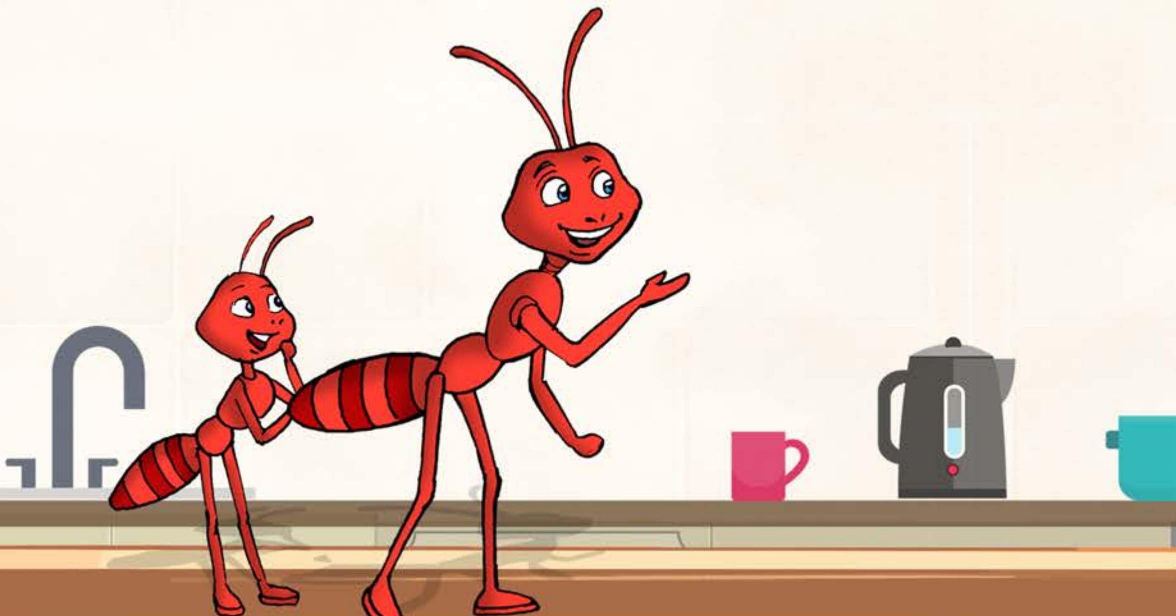

'देखो बेटा, झूठ बोलने की आदत च्यूइंग गम जैसी होती है। पहले तो मीठी लगती है और फिर उसे चबाने से मुँह में दर्द होने लगता है और हमें ही नुकसान होता है!'

'वह कैसे?' बिरवा ने मम्मी चींटी की बात को बीच में काटते हुए दूसरा सवाल किया।

'एक बार झूठ बोलने पर तुम पकड़ी नहीं जाती हो तो तुम्हें मज़ा आ जाता है। फिर दूसरी बार, तीसरी बार... इस तरह तुम्हें झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। लेकिन सामने वाले को कभी न कभी तो पता चल ही जाता है कि तुमने झूठ बोला है। तब तुम पर से उनका विश्वास उठ जाता है और फिर कोई भी तुम पर विश्वास नहीं करता।' मम्मी चींटी ने समझाते हुए कहा।

'आपकी बात सही है। कभी-कभी मेरी फ्रेन्ड भी मुझसे यही

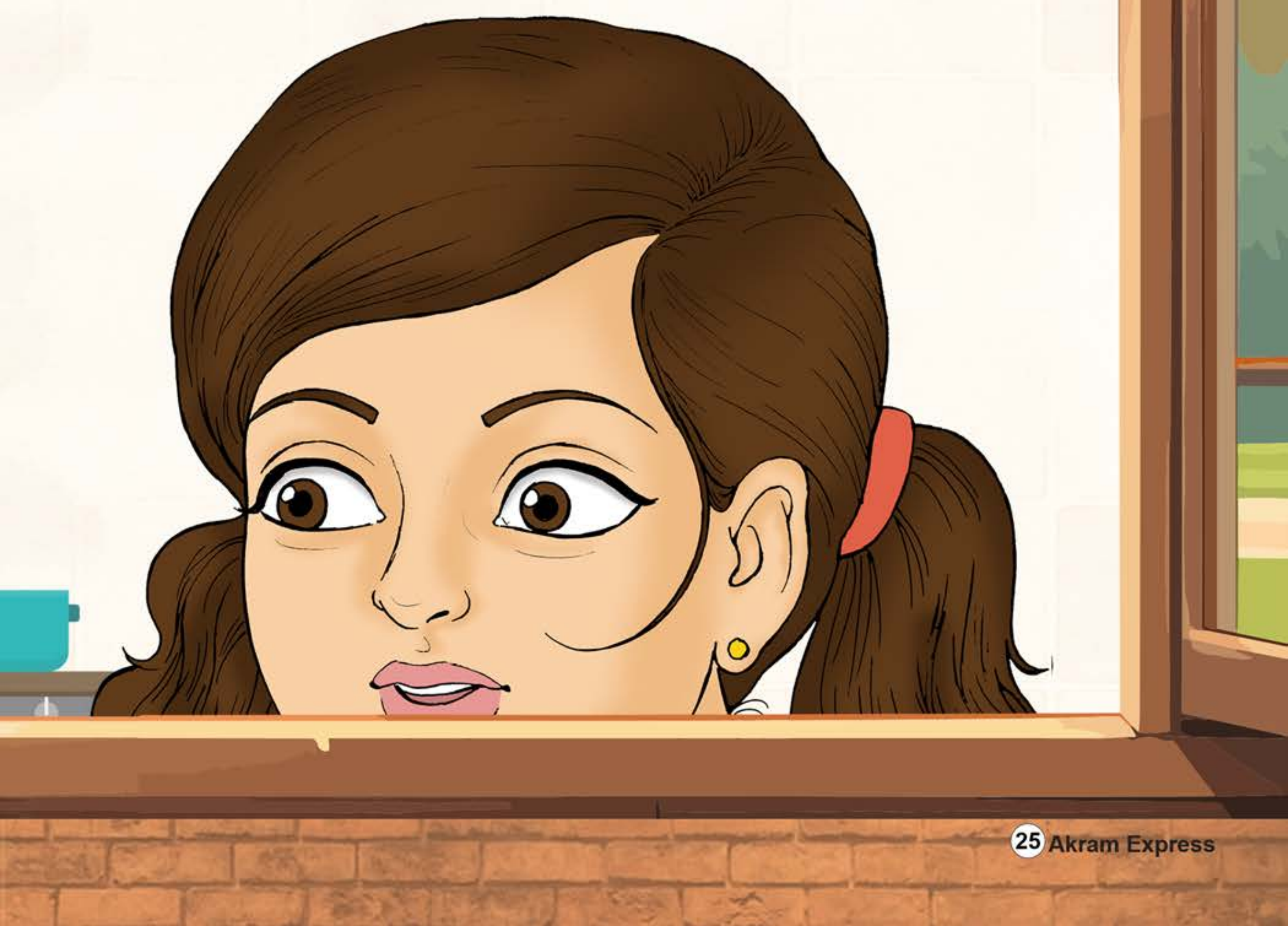

कहती है कि 'मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं है।' लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि मैं झूठ नहीं बोलना चाहती पर फिर भी मुँह से निकल जाता है। तो मुझे क्या करना चाहिए?' बिरवा ने पूछा।

यह बात तो मम्मी ने मुझे बताई है कि झूठ बोल देते हो तो सामने वाले से माफी माँग लेना। सच कहा न मैंने?' नन्हीं चींटी ने मम्मी की ओर देखते हुए पूछा।

'हाँ, हाँ। एकदम सही कहा। केवल माफी ही नहीं माँगना है, बल्कि फिर कभी मैं झूठ नहीं बोलूँगी ऐसा निश्चय भी करना है।' मम्मी चींटी ने नन्हीं चींटी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

'लेकिन आन्टी, मुझे अब भी समझ में नहीं आ रहा कि झूठ बोलने में मज़ा नहीं है पर फिर भी झूठ क्यों

बोल देते हैं?' बिरवा ने अपनी उलझन बताई।

'देखो बेटा, झूठ दो बातों के लिए बोलते हैं। एक तो तब जब तुम्हें कुछ चाहिए होता है और दूसरा तब जब तुम्हें किसी से डर लगता हो। लेकिन अगर तुम निश्चय करोगी तो तुम्हारी यह आदत छूट जाएगी।' मम्मी चींटी ने प्यार से कहा।

'आज मुझे कुछ नया सीखने को मिला। आज से मैं भी तुम्हारी तरह बहादुर बनने का प्रयास करूँगी। चलो मेरे साथ...' बिरवा ने नन्हीं चींटी की ओर देखते हुए कहा।

'कहाँ?' चींटी ने आश्चर्य से पूछा।

'मम्मी को बताना पड़ेगा न कि पेस्ट्री मैंने खाई है। इस प्यारी सी चींटी ने नहीं।' बिरवा ने हँसते हुए कहा।

'देखो, फिर से झूठ बोला! मम्मी से यह कहना पड़ेगा कि थोड़ी पेस्ट्री मैंने खाई और थोड़ी पेस्ट्री तुमने खाई।' चींटी ने हँसते हुए कहा।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स महाराष्ट्र के टूर पर निकले। इस बार रिज़ो ने ऐसी जगहों पर जाने का प्लैन बनाया था, जिसका नाम भी किसी ने नहीं सुना होगा। लेकिन उन जगहों पर जाकर सबको इतना मज़ा आया कि क्या बताएँ! कोंकण की हरी-भरी सीनरी को ज़ोई ने कैमरे में इतना भरा कि कैमरे की मेमरी भी कम पड़ गई। थीओ को कोंकण फूड का ऐसा शौक चढ़ा कि हर तीसरे दिन उसे सोल कढ़ी और उसण याद आते। जिफ्फी ने तो रिज़ो की तारीफों के पुल बाँध

दिए। 'रिज़ो, तुमने इन सभी जगहों को ढूँढ़कर तो सचमुच कमाल कर दिया।' सबने उस दिन शाम को चिपलूण शहर जाने का प्लैन बनाया। उन्होंने चिपलूण में कुछ म्यूज़ियम देखे और फिर घूमते-घूमते एक बुक स्टोर पर पहुँचे। वहाँ उन्हें गोपाल कृष्ण गोखले पर एक बुक मिली। सभी ने स्कूल में गोपाल कृष्ण गोखले के बारे में पढ़ा था। और यह भी सभी जानते थे कि भारत की आज़ादी में उनका कितना बड़ा योगदान है। उनका मूल स्थान चिपलूण से २५ किलोमिटर दूर था। जिफ्फी ने तुरंत ही वह बुक खरीद ली और कहा, 'आज रात को यह बुक पढ़कर मैं सबको कहानी सुनाऊँगा।'

रात होने पर जिफ्फी ने कहानी शुरू की।

एक बार गोपाल कृष्ण गोखले के शिक्षक ने पाठशाला के विद्यार्थीगण को गणित के कुछ सवाल घर से हल करके लाने को कहा। गोखले घर आए, तब उनका एक मित्र उनके घर पर बैठा था। मित्र बहुत ही होशियार था। मित्र की मदद से गोखले ने सवाल हल कर दिए।

दूसरे दिन वे पाठशाला गए। शिक्षक ने सभी के सवाल जाँचे। गोखले के सभी जवाब सही निकले। शिक्षक बहुत खुश हुए।

वे गोखले को इनाम देने के लिए आगे बढ़े। गोखले इनाम स्वीकार करने के लिए खड़े हुए। उन्होंने शिक्षक की ओर कुछ कदम बढ़ाए। लेकिन फिर कुछ याद आने पर वे वहीं ठहर गए।

विद्यार्थी और शिक्षक उनकी तरफ देखने लगे।

गोखले बहुत दुःखी हुए। उनकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। शिक्षक ने आश्चर्य से पूछा, 'तुम्हें तो इनाम मिल रहा है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए। तुम रो क्यों रहे हो?'

गोखले ने धीमी आवाज़ में कहा, 'असल में यह इनाम मेरा नहीं कहा जाएगा।'

'तुम्हारे सभी जवाब सही हैं। इनाम तो तुम्हें मिलना ही चाहिए।' शिक्षक ने कहा।

गोखले ने कहा, 'सर, जवाब सही हैं, लेकिन सच बात तो यह

है कि मैंने इसमें अपने एक मित्र की मदद ली है। मैंने स्वयं सवाल हल नहीं किए हैं।'

शिक्षक और विद्यार्थी यह सुनते ही रह गए। गोखले की यह सच्चाई देखकर शिक्षक ने मन ही मन सोचा, 'जब तक ऐसे बच्चे भारत में हैं, तब तक भारत की प्रगति को कोई रोक नहीं सकेगा।'

यह स्टोरी पढ़कर पहली बार जिफ्फी की आँखों में आँसू नहीं बल्कि चेहरे पर स्माइल थी। मानो उसे गोपाल कृष्ण गोखले की सच्चाई पर गर्व न हुआ हो! लेकिन, रिज़ो बिल्कुल रुआँसा हो गया।

'तुम्हें क्या हुआ?' ज़ोइ ने उससे पूछा।

'तुम लोग मेरी तारीफ कर रहे थे इसलिए मैंने तुम लोगों को सच नहीं बताया। वास्तव में ट्रिप की प्लैनिंग मैंने नहीं की है। पिछले साल टीगु यहाँ वेकेशन में आया था। उसीने मुझे यह पूरा प्लैन बनाकर दिया है।' रिज़ो ने दुःखी होते हुए कहा।

'अरे, एक तो तुमने सच बोला और दूसरा यह कि हम लोग इतना एन्जॉय कर रहे हैं, तो इसमें दुःखी होने की क्या बात है? डीडीमा लौटने पर हम सब टीगु को 'थैन्क यू' कह देंगे।' थीओ ने अपना फेवरिट वड़ा पाव खाते हुए कहा।

चलो आनंद उठाएँ...

कहानियों के अद्भुत सफर का...

ऐतिहासिक ऑडियो कहानियाँ अब

kids.dadabhagwan.org

वेबसाइट पर!